<u>जय बाबा</u>

<u>मेहेरके सागरसे मेहेरकी धारा</u>

(मधुसूदन पुंड)

मेहेरके सागर से मेहेरकी धारा
बहती है जीभर के पीले ! जामपे जाम उठाले !!घु!!

सरिताका बहना जो उसका धरम है !
यूँ बहती हरदम मेहेर की मेहेर है !
प्यासा अगर तू है तो जा किनारे !! १ !!

माँगे से मिलाती नहीहै किसीको !
तैय्यार है जो मिलता उसीको !
तनमन लगादे खुदको मिटादे !! २ !!

सूरज चमकता है सारे जहाँपर
जंगल हो बगिया हो कुटिया महल पर
चमके वहाँ जिसने खोली किवारे !! ३ !!

तुझसे तो पहले उसको गरज है
क्या तू है तैय्यार वो देखता है
क्या सोचता मधुसूदन समझले !! ४ !!

मेहेरके सागर से मेहेरकी धारा
बहती है जीभर के पीले ! जामपे जाम उठाले